बेथेस्दा का पोखर और उसके पाँच आँगन

पोखर क्या है?

सामान्य रूप से, “पोखर” एक ऐसा स्थान या बर्तन होता है जिसमें पानी या अन्य तरल रखा जाता है। बाइबिल में इसका अर्थ विशेष होता है—कभी यह विशेष उद्देश्य से बनाया गया तालाब होता है, कभी सिर्फ खोदकर तैयार किया जाता था।

बाइबिल में पोखरों के प्रकार

1. पशुओं के पानी के पोखर:
याकूब ने अपने पशुओं के लिए पानी के पोखर बनाए थे। यह पुराने नियम में चरवाहा जीवन का हिस्सा था।

“और उसने वे खंभे खड़े किए जो उसने पानी पिलाने की खानों से लिए थे…” (उत्पत्ति 30:38)

ये पोखर दिखाते हैं कि परमेश्वर रोजमर्रा की जरूरतों और पशुओं की देखभाल में provision करता है।

2. जल भंडारण गड्ढे:
यूसुफ़ को एक खाली गड्ढे में फेंक दिया गया था, जो खतरे और परित्याग का प्रतीक है।

“वे उसे पकड़कर उसे गड्ढे में डाल दिया; गड्ढा खाली था,
उसमें कोई पानी नहीं था।” (उत्पत्ति 37:23–24)

इस तरह के पोखर रोजमर्रा के जीवन में पानी रखने का तरीका थे, और कभी-कभी परीक्षा और कठिनाई का प्रतीक भी।

3. धार्मिक शुद्धि के पोखर:
वचनायोग (Tabernacle) और बाद में मंदिर में, पुरोहितों के लिए ताम्र पात्र बने थे ताकि वे पवित्र स्थान में प्रवेश से पहले अपने आप को धो सकें।

“और यहोवा ने मूसा से कहा, ‘और यह ताम्र की जलपात्रियाँ… पुरोहित इसे धोएगा…’” (निर्गमन 30:17–21)

ये पोखर बाहरी पवित्रता के प्रतीक हैं, जो आंतरिक पवित्रता की ओर संकेत करते हैं।

“इस कारण, आस्था के द्वारा हम हृदय की शुद्धि के साथ… यीशु
के पास निकट आते हैं।” (हिब्रू 10:22)

4. नैतिक शुद्धि के पोखर:
समारिया का पोखर कुछ धार्मिक शुद्धिकरण के लिए प्रयोग होता था।

“और वह शुद्ध हुआ और जाकर राजा के पास पहुँचा।” (1 राजा 22:37–38)

बेथेस्दा का पोखर

बेथेस्दा का पोखर यरूशलेम में भेड़ के द्वार के पास प्रसिद्ध था, और इसके चारों ओर पाँच आँगन बने थे। यह जगह विशेष रूप से विकलांग लोगों के लिए जानी जाती थी। वे पानी के हिलने का इंतजार करते थे, और विश्वास करते थे कि पानी में पहले प्रवेश करने वाला व्यक्ति स्वस्थ होगा।
यह मानव प्रवृत्ति को दिखाता है—लोग अक्सर उपचार और उद्धार के लिए अनुष्ठानों या अंधविश्वास पर भरोसा करते हैं, बजाय कि परमेश्वर पर विश्वास करने के।

38 साल तक बीमार व्यक्ति की कहानी:
येसु ने उस व्यक्ति को बिना पोखर में डाले ही चंगा किया। यह दिखाता है कि सच्चा उपचार और उद्धार केवल मसीह में है।

“यीशु ने उससे कहा, ‘उठ, अपना बिस्तर उठा और चल!’ और वह आदमी
उसी समय चंगा हो गया।” (यूहन्ना 5:8–9)

यह दिखाता है कि मानव प्रयास और बाहरी “पानी” पर भरोसा करने की तुलना येसु की तत्काल, सार्वभौमिक कृपा से नहीं की जा सकती।

“क्योंकि आप विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हैं, और यह आपकी
अपनी मेहनत से नहीं है; यह परमेश्वर का वरदान है।”
(एफ़िसियों 2:8–9)

झूठे आशाओं के प्रति चेतावनी

आज भी बहुत लोग बाहरी अनुष्ठानों (जैसे पवित्र जल, तेल, तीर्थयात्रा) पर भरोसा करते हैं, बिना सच्चे पश्चाताप और विश्वास के। बाइबल ऐसे भरोसे के प्रति चेतावनी देती है:

“वे अपने होठों से मुझे मानते हैं, किन्तु उनका हृदय मुझसे दूर है।” (यशायाह 29:13)

सच्चा उपचार पश्चाताप, यीशु में विश्वास, और पवित्र आत्मा की प्राप्ति से शुरू होता है।

“तो पश्चाताप कर और यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले, ताकि तुम्हारे पाप क्षमा हों; और तुम पवित्र आत्मा प्राप्त करोगे।” (प्रेरितों के काम 2:38)

बेथेस्दा का पोखर मंदिर के निकट होने से यह याद दिलाता है कि बाहरी धर्म बिना हृदय परिवर्तन के पर्याप्त नहीं है।

“यह वही है जो प्रजा मेरे से कहती है—‘प्रभु! प्रभु! हमने तुझे अपने मुख से मान लिया, पर हमारा हृदय तुझसे दूर है।’” (मत्ती 15:8)

आमंत्रण

यदि आपने अभी तक मसीह को स्वीकार नहीं किया है, तो अब विश्वास

करने का समय है।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना
एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश
न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए।” (यूहन्ना 3:16)

बपतिस्मा ग्रहण करें और अपने हृदय को पवित्र आत्मा के लिए खोलें, जो आपको सम्पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन करेगा।

“और देखो, मैं दरवाजे पर खड़ा हूँ; जो कोई मेरा स्वागत करेगा, मैं उसके पास आकर उसके साथ भोज करूँगा।” (प्रकाशितवाक्य 3:20)

आओ, प्रभु येसु!

Share on:
WhatsApp